PATNA WOMEN'S COLLEGE 1940

Hindi

Explore–Journal of Research
ISSN 2278 – 0297 **(Print)**
ISSN 2278 – 6414 **(Online)**
© Patna Women's College, Patna, India
http://www.patnawomenscollege.in/journal

प्रेमचंद के कथा साहित्य में मनोविज्ञान का उत्कृष्ट निदर्शनः मुख्यतः ईदगाह, गुल्ली डंडा और सच्चाई का उपहार के परिप्रेक्ष्य में।

• श्रेया भारती • अर्चना कुमारी • उषा कुमारी
• मंजुला सुशीला

Received : November 2016
Accepted : March 2017
Corresponding Author : Manjula Sushila

Abstract : 'मनोविज्ञान', एक ऐसा शब्द जो अपने-आप में रहस्यमय है। कारण, हर व्यक्ति विशेष की अपनी सोच, अपनी विचारधारा होती है। परिणामतः एक ही प्रकार की परिस्थिति में प्रत्येक व्यक्ति अपनी अलग सोच रखता है। वैसे में यदि बाल मनोविज्ञान की चर्चा की जाए, तो यह विषय न सिर्फ आकर्षक और मनोरंजक प्रतीत होता है, बल्कि हृदय-स्पर्शी भी है। हर बालक का मन एक पहेली के समान है और इस पहेली को समझने का प्रयास साहित्य जगत् के महान कथाकार प्रेमचंद ने बहुत ही बारीकी से किया है। उनकी कुछ बालोपयोगी कहानियाँ तो इतनी महत्त्वपूर्ण और लोकप्रिय हैं, कि उनकी चर्चा-मात्र से ही हम एक बालक के मन से रूबरू हो उठते हैं। यह बालमन न सिर्फ स्वयं को अभिव्यक्त करता है, बल्कि पूरे समाज के सम्मुख एक आदर्श भी स्थापित कर जाता है। प्रेमचंद द्वारा लिखी कहानी 'ईदगाह' और उसके मुख्य पात्र 'हामिद' ने हमें प्रेरित किया कि हम अपने शोधा-पत्र के विषय के रूप में कुछ ऐसी कहानियों का चयन करें, जिनमें बालमन को अभिव्यक्ति मिली है और समाज के मध्य एक सकारात्मक संदेश भी पहुँचा है। मानव-मन के पारखी रचनाकार प्रेमचंद की तीनों कहानियाँः ईदगाह, गुल्ली डंडा और सच्चाई का उपहार, हर प्रकार से बालकों की सोच और उनके मनोभावों को प्रकट करने में पूर्णतः समर्थ हैं।

संकेत शब्द : विचारधाारा, हृदय-स्पर्शी, बालोपयोगी, अभिव्यक्ति, सकारात्मक, मनोभावों।

श्रेया भारती
बी० ए०-तृतीय वर्ष (2014–2017), हिन्दी (प्रतिष्ठा),
पटना वीमेंस कॉलेज, पटना विश्वविद्यालय, पटना, बिहार, भारत

अर्चना कुमारी
बी० ए०-तृतीय वर्ष (2014–2017), हिन्दी (प्रतिष्ठा),
पटना वीमेंस कॉलेज, पटना विश्वविद्यालय, पटना, बिहार, भारत

उषा कुमारी
बी० ए०-तृतीय वर्ष (2014–2017), हिन्दी (प्रतिष्ठा),
पटना वीमेंस कॉलेज, पटना विश्वविद्यालय, पटना, बिहार, भारत

मंजुला सुशीला
व्याख्याता, हिन्दी विभाग, पटना वीमेंस कॉलेज,
बेली रोड, पटना – 800 001, बिहार, भारत
E-mail : manjula71pwc@gmail.com

भूमिका :

प्रेमचंद ने हिन्दी कहानी और उपन्यास की एक ऐसी परम्परा का विकास किया, जिसने पूरी शती के साहित्य का मार्ग-दर्शन किया। इन्होंने ही साहित्य की यथार्थवादी परम्परा की नींव रखी। उनका लेखन हिन्दी साहित्य की एक ऐसी विरासत है, जिसके बिना हिन्दी के विकास का अध्ययन अधूरा ही रहेगा। प्रेमचंद आधुनिक हिन्दी कथा साहित्य के पितामह माने जाते हैं। प्रेमचंद का यह मानना था कि ''साहित्यकार देशभक्ति और राजनीति के पीछे चलने वाली सच्चाई नहीं, बल्कि उसके आगे मशाल दिखाती हुई चलने वाली सच्चाई है।'' उन्होंने इस सच्चाई को अपने साहित्य के माध्यम से स्थापित किया। बहुमुखी प्रतिभा संपन्न प्रेमचंद ने उपन्यास, कहानी, नाटक, समीक्षा, लेख, सम्पादकीय आदि अनेक विधाओं में साहित्य की सृष्टि की, किन्तु जो यश और प्रतिष्ठा उन्हें कहानी और